RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2021-23

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 10 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 14 अगस्त 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

उद्यान को माफियाओं से बचाना है

डॉ.हरीश चन्द्र अंडोला

रानीखेत।चौबटिया गार्डन जिसका क्षेत्रफल 235 हैक्टेयर है की स्थापना 1860 में हुई लेकिन इसने विधिवत बाग का रूप 1869 में लिया। मि. क्रो के नेतृत्व में यहाँ पर सेब, नाशपाती, खुवानी, एप्लम चेरी, हैजैलनट आदि शीतोष्ण फल पौधों का रोपण किया गया। ब्रिटि ा ाासकों ने बर्ष 1932 में पर्वतीय क्षेत्रों में शीतोष्ण फलों के उत्पादन सम्बन्धी ज्ञान जैसे पौधों को लगानाए पौधों का प्रसारण, मृदा की जानकारी, खाद पानी देने> कटाई-छंटाई, कीट व्याधियों से बचाव आदि के निराकरण हेतु चौबटिया उद्यान में पर्वतीय फल शोध केन्द्र की स्थापना की। केन्द्र द्वारा अन्य पर्वतीय राज्यों हिमाचल प्रदेश, जम्बू काश्मीर, मणिपुर, सिक्किम तथा पड़ोसी देश भूटान, नेपाल, अफगानिस्तान को फल पौध रोपण सामग्री उपलब्ध कराई गई साथ ही इन राज्यों व प्रदेशों के प्रसार कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण दिया जाता रहा। राज्य बनने पर आश जगी थी कि अपने राज्य की सरकारें पुरखों के रखे राज्य में उद्यान विकास की आधारशिला को यहाँ के बागवानों के हित में उन्नति के पथ पर आगे बढायेंगें लेकिन आज उद्यान विकास की पुरखों की रखी यही आधारशिला बन्द होने के कगार पर है। उद्यान विकास द्वारा ही इस पहाड़ी राज्य का आर्थिक विकास सम्भव था किन्तु बिडम्बना देखिये राज्य बने बाइस बर्षों में भी उद्यान विभाग को स्थाई निदेशक नहीं मिला। राज्य बनने से अब तक 12 से अधिक कार्य वाहक निदेशक एक या दो बर्षों के लिए बने जो अपना सेवा विस्तार बढ़ाने के चक्कर में हुक्मरानों को खुश करने में ही रहे, उसी का दुष्परिणाम है कि आज अधिकतर आलू फार्म, औद्यानिक फार्म, फल शोध केन्द्र बन्द हो चुके हैं या बन्द होने के कगार पर है। भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के कार्यान्वयन में पारदर्शिता नहीं दिखाई देती। फर्जी उत्पादन के आंकड़ों के सहारे प्रगति आख्या दर्शाई जाती है। एक समय था जब उद्यान विभाग फल पौध, सब्जी बीजए आलू बीज के उत्पादन में आत्मनिर्भर ही नहीं बल्कि उच्च गुणवत्ता के सेब आड़ू प्लम खुवानी नाशपाती की फल पौध अन्य राज्यों को भी देता था वर्तमान में पहाड़ी जनपदों की पंजीकृत व्यक्तिगत नर्सरियों विभाग की उपेक्षा के कारण समाप्त हो रही है। सेब ग्राफ्ट बाधाने हेतु ऊँचे दामों पर सेब के बीजू पौधे भी राज्य की पंजीकृत व्यक्तिगत नर्सरियों की अनदेखी कर काश्मीर से मंगाये जा रहे हैं। राज्य में अधिकतर गतिविधियां बन्द पड़ी है योजनाओं में अधिकतर निम्न स्तर के निवेश उच्च दामों में निजी कम्पनियों या दलालों के माध्यम से अन्य राज्यों से क्रय किए जा रहे हैं। उद्यान विकास द्वारा राज्य को आत्मनिर्भर बनाने का कोई प्रयास नहीं किया गया। अधिकारियों की फौज खड़ी कर दी गई है ज्यादातर अधिकारी व कर्मचारी देहरादून में बैठा दिये गये है उद्यान निदेशालय चौबटिया रानीखेत को एक अधिकारी चला रहा है।

भारत रत्न पंडित गोविन्द बल्लभ पन्त ने उत्तर प्रदेश में अपने मुख्यमंत्री के कार्य काल में पर्वतीय क्षेत्रों के विकास का सपना देखा व उसे वास्तविक रूप से धरातल पर उतारने के लिये रानीखेत में सन् 1953 में माल रोड़ रानीखेत (अल्मोड़ा) में किराए के भवनों में उद्यान विभाग का निदेशालय फल उपयोग विभाग उत्तर प्रदेश रानीखेत की स्थापना की। यह निदेशालय उत्तर प्रदेश सरकार का एक मात्र निदेशालय था जिसका मुख्यालय पर्वतीय क्षेत्र रानीखेत में स्थापित था। डॉ. विक्टर साने इसके पहले निदे ाक बने लम्बे समय तक समस्त उत्तर प्रदेश का उद्यान निदेशालय रानीखेत रहा। राज्य बनने से पूर्व उद्यान निदेशालयए उद्यान भवनए चौबटिया रानीखेत से संचालित होता था राज्य बनने के बाद धीरे धीरे सभी वरिष्ठ अ ाकारियों के पद देहरादून सम्बन्ध कर दिए गए। निदे ाालय को पूरी तरह सर्किट हाउस देहरादून सिफ्ट करने के प्रयास कार्यवाहक निदेशकों द्वारा समय समय पर किए जाते रहे हैं। उद्यान विभाग में भले ही उद्यान मंत्री ने अटैचमेंट पर चाबुक चलाने का काम किया है लेकिन उत्तराखण्ड के कई ऐसे भी विभाग हैंए जिनमें अटैचमेंट का खेल अभी भी जारी है। जरूरत से ज्यादा अधिकारी और कर्मचारी देहरादून में निदेशालयों में तैनात हैं। ऐसे में देखना ये होगा कि क्या जिस तरीके से अटैचमेंट के खेल पर कैबिनेट मंत्री ने चाबुक चलाया है, क्या अन्य मंत्री और खुद मुख्यमंत्री भी उसी राह पर चलते हुए कोई फैसला लेंगे। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार हाईकोर्ट में दीपक करगेती ने जनहित याचिका दायर की थी। जिसमें उन्होंने कहा है कि उद्यान विभाग में कई घोटाले हुए हैं। उद्यान विभाग में लाखों का घोटाला किया गया है, जिसमें फल और अन्य के पौधरोपण में गड़बडियां की गई हैं। विभाग की ओर से एक ही दिन वर्क आर्डर जारी कर उसी दिन जम्मू-कश्मीर से पेड़ लाना दिखाया गया है, जिसका पेमेंट भी कर दिया गया।

शीतकालीन सत्र में निलंबित उद्यान निदेशक की ओर से पहले एक नकली नर्सरी अनिका ट्रेडर्स को पूरे राज्य में करोड़ों की पौध खरीद का कार्य देकर बड़े घोटाले को अंजाम दिया। सामाजिक कार्यकर्ता ने कहा कि उन्हें सरकार के निर्णय पर कुछ नहीं कहना है। यह आस्था 9 अगस्त को उच्च न्यायालय निर्णय से जुड़ी है। उन्होंने कहा कि सरकार का मौन सम्पूर्ण भ्रष्टाचार का कारण रहा है। पिछले डेढ़ वर्ष से सरकार ने किसानों की कोई सुध नहीं ली। यहाँ यह बताना उचित होगा कि हाल ही में डॉ. बवेजा के पूर्ववर्ती डॉ. बीर सिंह नेगी को छोड़कर, जिनका निदेशकए बागवानी के रूप में 6 वर्षों का परेशानी मुक्त और दोषरहित लम्बा कार्यकाल रहा, किसी अन्य निदेशक का कार्यकाल परेशानी मुक्त नहीं रहा। दरअसल यह वही अधिकारी हैं जिनके खिलाफ कई बार शिकायतें भी आई, जाँच भी हुई, लेकिन जाँच की फाइलें ठण्डे बस्ते में चली गई। विभाग के स्तर पर किसी कार्रवाई को अमल में नहीं लाया गया। कई बार सवाल उठाए गए कि क्या इतने आरोपों के बीच भी निदेशक उद्यान पर कार्रवाई ना होना किसी बड़े संरक्षण की ओर इशारा कर रहा है। ऐसे में मुख्यमंत्री ने जो एक्शन लियाए वह बाकी विभागों और मंत्रियों के लिए भी एक बड़ा सबक बन गया है।

अवैज्ञानिक सड़क निर्माण से खतरा!

धापा और तल्ला दुम्मर तक प्रभावित

जगदीश बृजवाल

आँखिर दोषी कौन...? पहाड़ में विकास के नाम से आज विनाशलीला भी आँखों के सामने दिखाई देती है शायद उस विनाशलीला को समझने में भोली-भाली जनता ठगा सा महसूस करता है। समझ नहीं पाया की अचानक गाँव में दरारें, भूस्खलन, जमीन का धंसना, कटाव इतनी तेजी से क्यों होते जा रहा है।

धापा व तल्ला दुम्मर, क्षेत्र मुनस्यारी, पिथौरागढ़ के दोनों गाँव जो पूर्व से ही सम्वेदनशील थे किन्तु जब से मिलम बोर्डर रोड़ निर्माण कार्य प्रगति पर रहा तथा दरकोट से मुनस्यारी रोड 10 किमी चौड़ीकरण का कार्य प्रारम्भ हुआ तो अवैज्ञानिक तरीके से किया गया निर्माण कार्य दुम्मर गाँव से ठीक ऊपर सैकड़ों डायनामाइटिक बिस्फोट से प्रतिदिन पहाड़ को तोड़ते रहे, जिसके चलते गाँव में भूकम्पीय कम्पनता जैसी स्थिति बनी रही। जिसका खामयाजा आज तक गाँव के लोगो को भुगतना पड़ रहा है।

धापा से मिलम मार्ग दरकोट बैंड से आगे धापा गाँव तक लगभग 1.5 किमी दूरी के बीच में बहने वाली छोटी नदी सुरिनगार व धापा से 500 मीट्ददूर आगे चिलमधार पहाड़ के चट्टान को जिस अवैज्ञानिक तरीके से काटा गया उसके प्रत्यक्षदर्शी आज भी आस-पास के कयी गांवों के लोग मोजूद है। सुबह-साम सैकड़ों डायनामाइट विस्फोट से धापा गाँव में प्रति दिन भूकम्प जैसी स्थिति रहती थी। गाँव के चारों ओर से वर्षा;तु में लगातार भू-स्खलन होता रहता है। जिसका प्रभाव तल्ला दुम्मर गाँव तक रहा था।

सड़क निर्माण में सड़क का मलवा सुरिनगार के किनारे जमा होने पर बरसात में बाढ़ जैसी स्थिति बनकर सदियों से सुन्दर सा समतल स्थल जहाँ कई घराटे पुराने इतिहास की याद दिलाती थी, वर्षों से मजबूत पुल अकल्पनीय सोच के अनुरूप भयानक मिट्टी के जमाव से बाढ़ का रूप बनकर सबका नामोनिशान मिटा गया, यदि जाँच टीम द्वारा निरीक्षण कर अपनी जाँच रिपोर्ट पेश करती तो निष्कर्ष पर पहुँच जाते।

जीमीघाट से नीचे गोरी नदी के किनारे ऊपर चट्टान से आया मलवा जमा होते रहा, मिट्टी के ढेर ने वर्षाकाल में गोरी नदी में गर्दा बनाकर भंयकर बाढ़ की स्थिति बना दिया। सर्वप्रथम गोरी नदी के किनारे सुन्दरतम स्थल, पुरातन सुरिनगार माइक्रोहाईडिल पावर हाउस को उखाड़ते अपनी भयावह कार्यवाही करते जमींदोज कर दिया, फिर उससे आगे की कार्रवाई नदी किनारे निवास करने वाले लोगों के लिए भयानक तरह से अविस्मरणीय बना दिया है।

उस वर्ष धापा, दुम्मर गाँव में कयी घर जमींदोज हो गए, लोग बेघर होकर शिविरों में रहने को मजबूर हो गए, स्वयं लेखक भुक्तभोगी है। आज भी कुछ परिवार खतरे के जद में रहने को मजबूर हैं।

यद्यपि गाँव की जनता समझ न पायी या जुबान को दबाये रक्खा, कह नहीं सकते किन्तु बीआरओ ने ही प्रथमदृष्टया दोनों गाँव के अस्तित्व को खतरा पहुँचाने में महत्वपूर्ण कार्य किया है। उस डायनामाइट विस्फोट की स्थिति को देखने वाला स्वयं प्रत्यक्षदर्शी हूँ। जब तल्ला दुम्मर गाँव से ऊपर भारी मात्रा में विस्फोटक सुबह-शाम किया जाता था, जैसी स्थिति होती थी जिसके विषय क्षेत्र के जनता व गाँव वालों के द्वारा किसी प्रकार का विरोध नहीं किया गया, कारण एक मात्र विकल्प उनके पास सड़क निर्माण हेतु विस्फोट करना ही हो, वास्तव में गहराई से चिन्तन की जरूरत है आज लोग गाँव से पलायन करते जा रहे हैं पर हमारे अन्दर जागरूकता की समझ विकसित करना आवश्यक है भले आज कार्य करने की शैली बीआरओ ने बदल दिया है अब पहाड़ कटर से काटे जाते हैं पर हमारे दोनों की गाँवों की चूले तो हिला कर रख दी है, हमारा गुनहगार को गुनाहों का एहसास न करा पाना हमारी मजबूरी, अज्ञानता या दुर्भाग्य है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

प्रवेश करवाने की आड़ में दादागिरी करना अच्छी बात नहीं है

छात्र नेता बनने के लिये कितने ही प्रकार के हथकण्डे अपनाए जाते रहे हैं, उनमें प्रवेश के समय सुर्खियों में बना रहना भी एक है। इन दिनों भी यह सब हो रहा है। कालेज और विश्वविद्यालयों में प्रवेश करवाने के लिये अपनी अहमियत दिखाने के लिये कुछ छात्र नेता वह सब कर रहे हैं जो खुला उल्लंघन है। इन्हें यह समझ नहीं आ रहा है कि जब शासन द्वारा प्रवेश से लेकर परीक्षा व अवकाश तक की सारी सारणी बना दी है और प्रवेश के लिये ऑनलाइन पोर्टल से व्यवस्था का संचालन हो रहा है। फिर भी किसी पेचिदा मामले को ले आकर उलझ रहे हैं।

एक बात और, पढ़ने वाले विद्यार्थी कभी भी अपने गुरुजनों या व्यवस्था से उलझाव नहीं करते हैं क्योंकि वह जानते हैं कि आगे बढ़ने के लिये तैयारी जरूरी है। अब तो संस्थागत पढ़ाई के लिये प्रवेश न होने पर भी दिक्कत नहीं है कारण मुक्त विश्वविद्यालय ने दूरस्थ शिक्षा के द्वारा यह सुविधा उपलब्ध करा दी है। इसके बावजूद कालेज में भीड़ बनाने या बिना सूझबूझ वाले जोर से चिल्ला रहे हैं। सितम्बर माह में छात्र संघ चुनाव होने हैं, ऐसे में इन दिनों कई कालेजों में कतिपय युवा कौतिक कर रहे हैं। वह भूल रहे हैं कि समय तेजी से बदल रहा है और वह अपना समय व्यर्थ कर रहे हैं। ऐसा ही एक हंगामा एसएसजे परिसर अल्मोड़ा में भी देखने को मिला। एक छात्रा के प्रवेश को लेकर एक छात्र नेता महिला प्रोफेसर के बीच विवाद इतना ज्यादा हो गया कि चौकी में दोनों पक्षों ने तहरीर सौंप दी।

बहुत ही साफ-सुथरी बात है कि संस्थागत पढ़ाई करने वालों की संख्या का अनुपात कम हो चुका है और चौंचलेबाजी अधिक होने लगी है। सख्त नियम बताओ तो उलझाव होता है। व्यवहारिक बात करो तो दबाव बनाने लगते हैं। आंखिर यह सब क्या है? प्रवेश कराने की आड़ में दादागिरी करना अच्छी बात नहीं है। योग्य विद्यार्थी को कहीं पर कोई रुकावट नहीं होती है।

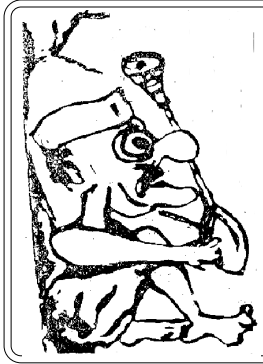

फसक

दाज्यू, मन की बात से तरावट आने वाली ठैरी

अब कहाँ लगते हैं भरैक? रील बनाने का जमाना है बल

दाज्यू, गुंसाई दा ने मोहल्ले के लोगों के साथ मोदी ज्यू की मन की बात सुनी। वह बहुत खुश हैं। कह रहे थे- 'वह सुनाते रहें, हम सुनते रहें। बहुत अच्छा लग रहा है।' दाज्यू, क्या बताएं? टिटनैस का इंजेक्सन लगाने के बाद भी पैर सूज रहा है। अब कहाँ लगते हैं भरैक? रील बनाने का जमाना है बल। जो जितनी बना सका, बनाते रहे। जमाने ने रफ्तार पकड़ ली है। जाम ही जाम, एम्बुलेंस में बच्चे का जन्म हो रहा है, ई-चालान होने लगे हैं, खाने का ऑर्डर ऑनलाइन होने लगा है, भुगतान गूगल-पे ठैरा। कोठे बन्द हो चुके हैं, नंग-धड़ंग धुंआधार.....हो रही है। सबकी अपनी-अपनी बात ठैरी। बात चाहे किसी के मन की हो, तरावट तो आने ही वाली हुई। पूर्व कबीना मंत्री और किच्छा के विधायक तिलकराज बेहड़ कह रहे हैं- 'पुलिस, आरटीओ, जिला प्रशासन की शह के बिना जिले में ओवरलोडिंग नहीं हो सकती है। इसीलिए सभी थाने अवैध वसूली में लगे हैं। कई अधिकारी तक अवैध वसूली कर रहे हैं।' दाज्यू, मंत्री और विधायकों के मन की बात भी तरावट भरी होने वाली ठैरी।

उद्यान विभाग के निलम्बित चल रहे निदेशक हरमिन्दर बवेजा की एसआईटी जाँच होगी बल। बाबा जी कह रहे हैं- 'स्वामी प्रसाद भी बौई गया है।' दाज्यू, व्यवहार में कौन कितना बुद्ध और कितना हिन्दू है वह अपने से ही सवाल कर लेना चाहिये। डीजे लगाकर सड़क में झम्मक झम्मक करने से भगवान भी बेचारे.....। रहने भी तो बाबा और स्वामी को। अपने बगश्वर में सुरंग बनने वाली है। इस सुरंग से होकर गाड़ियां चलेंगी बल। जब से नगर पालिका पिथौरागढ़ ने यह घोषणा की है कि खुले में अपने कुत्ते को शौच करवाने वाले की जो भी व्यक्ति फोटो वीडियो बनाकर पालिका को देगा उसे 500 रुपये का इनाम मिलेगा, होशियार दा वनप्लस मोबाइल लेकर गलियों में घूम रहे हैं। दाज्यू, हमने बहुत समझाया कि मत उलझो लेकिन इनाम का लालच ठैरा। बेरोजगारी भी हुई। बबलू बता रहा है- 'बीच प्रमाणीकरण अभिकरण में बीज बिक्री गड़बड़ी की फाइल सचिवालय से गायब हो गई है।' दाज्यू, किसके मन की कौन जाने? मणिपुर में हुए अत्याचार से सारा विपक्ष गुस्साया हुआ है।

दाज्यू, चम्पावत के पूर्व विधायक होमेश खर्कवाल ने वीडियो पोस्ट करते हुए मन की बात में कहा है- 'जिले के कुछ नेता खुद को डीएम एसडीएम से कम नहीं समझ रहे हैं।' दाज्यू, हमारे मन में और ही आ रही है पर क्या करें?

-तुम्हारा भुली झकरुवा

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं-

डॉ. भीम कुमार
सामाजिक कार्यकर्ता
नया बाजार
बेरीनाग

भीम सिंह
बिशन सिंह बिष्ट
स्थापित 1964
सहयोगी प्रतिष्ठान-
देवाशीष इंटरप्राईजेज
गोविन्द बिष्ट
राजेश बिष्ट
भराड़ी (बागेश्वर)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

स्वास्थ्य

ल्यूकोडर्मा के इलाज के लिए लोकप्रिय दवा लुकोस्किल

डॉ.हरीश चन्द्र अन्डोला

सफेद दाग एक ऐसी बीमारी है, जिसके कारण शरीर पर कई असामान्य सफेद धब्बे हो जाते हैं और वे अनियंत्रित तरीके से बढ़ते रहते हैं। कई लोग इस बीमारी के कारण हीन भावना से ग्रस्त हो जाते हैं। लेकिन पहाड़ में तैनात के एक वैज्ञानिक ने अब आयुर्वेद का सहारा लेकर इस बीमारी के लिए दवा खोज ली है। डॉ. हेमन्त कुमार पाण्डेय पिथौरागढ़ में तैनात हैं। इन की उपलब्धियों की जितनी तारीफ की जाए उतना कम है। उत्तराखण्ड के लिए सम्मान की बात यह है कि डॉ. हेमन्त कुमार पाण्डेय को साईंटिस्ट ऑफ द ईयर अवार्ड से सम्मानित किया गया है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने पिथौरागढ़ स्थित रक्षा जैव जां अनुसंधान संस्थान में वरिष्ठ विज्ञानी के पद पर कार्यरत डॉ. हेमन्त कुमार पाण्डेय को यह सम्मान दिया है। बीते 25 सालों से हेमल्त कुमार पाण्डे हिमालय क्षेत्र में जड़ी बूटियों पर शोध कर रहे थे। उन्होंने सफेद दाग की दवा यूको स्किन को हिमालय में पाए जाने वाले औषधीय पौधे विश्वनाथ से तैयार किया। यह दवा आयुर्वेदिक है और खाने और लगाने दोनों स्वरूपों में मौजूद है। इस दवा के आयुर्वेदिक फार्मूला को डीआरडीओ ने एक निजी कम्पनी को स्थानान्तरित किया जो इसे बाजार में बेच रही है। ल्यूकोस्किन के अलावा डॉ. पाण्डेय 6 दवाओं और हर्बल उत्पादों की खोज कर चुके हैं। इसमें दांत दर्द खुजली रेडिएशन से बचाने वाली क्रीम के अलावा आयुर्वेदिक दवाएं शामिल है। किस दवा का लाभ इस बीमारी से ग्रसित लाखों लोग उठा रहे हैं। आपको जानकर हैरानी होगी कि इस उत्पाद की बिक्री से डीआरडीओ को दो करोड़ 30 लाख रूपए से ज्यादा के रायल्टी मिल चुकी है। से तो वह छह दवाओं एवं हर्बल उत्पादों की खोज कर चुके हैं लेकिन उनकी सबसे बड़ी खोज सफेद दाग यानी ल्यूकोडर्मा की दवा ल्यूकोस्किन है। हिमालयी जड़ी-बूटियों से तैयार यह दवा सफेद दाग की समस्या का प्रभावी निदान करती है। इस तकनीक को कुछ साल पहले नई दिल्ली की एमिल फार्मास्युटिकल को हस्तान्तरित किया गया था। मौजूदा समय में यह ल्यूकोस्किन एक प्रभावी दवा के रूप में अपनी पहचान बना चुकी है। ल्यूकोस्किन को हिमालयी क्षेत्र में दस हजार फुट की ऊँचाई पर पाए जाने वाले औषधीय पौधे विषनाग से तैयार किया गया है। यह खाने और लगाने वाली, दोनों स्वरूपों में उपलब्ध है। अब तक डेढ़ लाख से अधिक लोगों का इससे उपचार किया जा चुका है। विश्व में वैसे तो एक से दो फीसदी लोग सफेद दाग की समस्या से प्रभावित हैं लेकिन भारत मेंऐसे लोग तीन से चार फीसदी होने का अनुमान है। इस हिसाब से यह संख्या पाँच करोड़ होती है। यह आटो इम्यून डिसआर्डर है जिसमें त्वचा के रंग के लिए जिम्मेदार कुछ सूक्ष्म कोशिकाएं निष्क्रिय हो जाती हैं। हालांकि इसका शरीर की क्षमता पर किसी प्रकार काप्रभाव नहीं पड़ता है। पाण्डेय ने इसके अलावा खुजली, दांत दर्द, रेडिएशन से बचाने वाली क्रीम, हर्बलहेल्थ उत्पाद आदि भी उन्होंने तैयार किए हैं। इनमें से ज्यादातर उत्पादों की तकनीक हस्तान्तरित हो चुकी है। लेखक डॉ. अन्डोला वह डॉ. हेमन्त कुमार पाण्डेय के गुरु रूसा के सलाहकार प्रो. एमएसएम रावत, है।

ज्योतिष की बातें - 139

17 अगस्त 2023 को सूर्य स्वराशि सिंह में प्रवेश करेगा । वहाँ पर शनि की क्रूर दृष्टि होगी तो गुरु की शुभ दृष्टि भी पड़ेगी। इस कारण कुल मिलाकर सूर्य अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा। अत: अगले एक माह मिथुन, मीन, वृश्चिक व तुला राशि के जातकों को सूर्य स्वास्थ्य, सफलता, सम्मान आदि अपने कारक विषय में अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा। सिंह, कर्क, मेष, मकर व धनु, राशि के जातकों को सामान्य शुभ फल प्रदान करेगा। अन्य तीन राशि के जातकों को अभी धैर्य रखना चाहिए।

18 अगस्त 2023 को मंगल मित्रराशि से निकलकर शत्रुराशि कन्या में प्रवेश करेगा, जहाँ पर कोई शुभ दृष्टि भी नहीं होगी। इस कारण मंगल अत्यन्त निर्बल रहेगा। फिर भी अगले 46 दिन मंगल पराक्रम, खेलकूद आदि अपने कारक विषयों में सिंह, कर्क, मेष व वृश्चिक राशि के जातकों को अल्पमात्रा में शुभ फल प्रदान करेगा।

18 अगस्त 2023 को शुक्र कर्क राशि में गोचर करता हुआ पूर्व में उदय हो जाएगा अत: शुक्र द्वारा प्राप्त होने वाले शुभाशुभ फल अब स्पष्ट रूप से प्राप्त होंगे।

हरियाली तीज- श्रावण मास के शुक्लपक्ष की उदयकालीन त्रिमुहूर्त व्यापिनी, चतुर्थीयुता, तृतीया तिथि को हरियाली तीज मनाई जाती है। अत: शनिवार 19 अक्टूबर 2023 को हरियाली तीज का पर्व मनाया जाएगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

सम्यक विचार- 30

वास्तविक स्वतंत्रता

मेरे विचार से, राजनीतिक सन्दर्भ में, यदि शासक हमारा हित चाहता है तो हम स्वतन्त्र हैं और यदि शासक हमारा शोषण करना चाहता है तो हम परतन्त्र हैं। अपने देश को स्वतन्त्र हुए 76 वर्ष हो चुके हैं लेकिन अभी तक अपने देश में स्वयं का तन्त्र विकसित नहीं हो सका है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बाद अंग्रेजी शासन में सारा तन्त्र अंग्रेजों ने अपना ही लागू किया था। चाहे वह शिक्षा व्यवस्था हो, चाहे स्वास्थ्य व्यवस्था हो, चाहे न्याय व्यवस्था हो, सभी क्षेत्रों में इंग्लैण्ड ने अपना ही तन्त्र भारत में लागू किया था। दुर्भाग्य की बात है कि स्वतन्त्रता के बाद अभी तक हम अपना कोई भी तन्त्र विकसित नहीं कर सके। जो व्यवस्था अंग्रेजों के जमाने में चल रही थी वही अभी भी है, न्याय प्रणाली जो अंग्रेजों के जमाने में चल रही थी वही अभी भी चल रही है, स्वास्थ्य के सन्दर्भ में जो अस्पतालों की व्यवस्था पहले चल रही थी वही अभी भी है, सरकारी नौकरियों के लिए जो चयन प्रणाली अंग्रेजों के समय थी वही अभी भी चल रही है। कोई भी परिवर्तन अभी तक नहीं किया जा सका। हिन्दी भाषा के बारे में अथवा संस्कृत भाषा की उन्नति के बारे में, भारतीय संस्कृति के प्रचार प्रसार के बारे में, आयुर्वेद आदि चिकित्सा पद्धति के बारे में अभी तक कोई उन्नति नहीं हो सकी। बल्कि अंग्रेजी भाषा, पाश्चात्य संस्कृति पहले से अधिक दृढ़ हो गई है। अंग्रेजों की लागू की गई सभी व्यवस्थाएँ अब और अधिक सुदृढ़ हो गई हैं। वास्तव में 15 अगस्त 1947 को देश स्वतन्त्र नहीं हुआ था, सत्ता का हस्तान्तरण मात्र हुआ था। ऐसा मेरा विचार है।

वास्तविक स्वतन्त्रता तो तब कही जाएगी जब हम सभी प्रकार की व्यवस्थाएँ अर्थात् सभी तन्त्र अपने ही विकसित करें। देश में अंग्रेजों के शासन के पहले अथवा प्राचीन काल में जिस तरह की व्यवस्थाएँ प्रचलित थीं उनमें आधुनिक काल के अनुरूप संशोधन करके लागू की जानी चाहिए तभी हम वास्तविक रूप से स्वतन्त्र कहे जाएंगे।

-सरल

गुरू महिमा

गुरू वह जो लघुता हर दे
गुरू वह जो गुरूता भर दे
गुरू निजता मिटा दे
गुरू सकल समता ला दे
गुरू वह जो स्वार्थ भगा दे
गुरू वह जो सहयोग सिखा दे
गुरू विवेक जगा दे
गुरू गोविन्द दिखा दे।

गुरू निज गौरव का बोध कराते
गर्व अहं तम मिटाते
धीरज धरम का मरम बताते
कला कौशल कर्तव्य पथ जताते
गुरू मिथ्याभिमान भगाते
सम्यक् स्वाभिमान जगाते
व्यभिचारी को सबक सिखाते
पौरुष भर पराक्रमी बनाते।

गुरू मिटाते मेरी-पराई
बनाते धरा पर भाई-भाई
गुरू से ही ज्ञान विज्ञान
करते सदैव त्रुटि निदान
गुरू दे विद्या जीवन महान बनाते
जगा आत्मा जनम सफल हैं करते
हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता
गुरू महिमा अनंत गुरू गाथा अनन्ता।

-दीवान सिंह कठायत,बेरीनाग

श्रम का सम्मान

श्रमिक खटता दिनभर करता है मजदूरी।
पेट पालना जरूरी है उसकी मजबूरी।
चन्द पैसे देते हो क्यों समझते एहसान।
निर्माण सब उसके पसीने से बने आसान।
काम लो खूब उससे ठीक है जरूरी है।
भर दो स्नेह से उसका दिल क्या मजबूरी है।
अन्नदाता किसान का संसार में ऊँचा है स्थान।
श्रम और अन्न के बिना क्या जीवन जीना है आसान।
किसान और श्रमिक ईश्वर के दूत हों जैसे।
श्रम की हवनशाला के अग्रदूत हों जैसे।
पढ़ा लिखा अधिक नहीं जप-तप न जाने,
श्रम की आहूति को ही अपना कर्तव्य माने।
विश्व ही ईश्वर की प्रथम है कृति,
प्रकृति संवारना श्रम की है वृत्ति ।

श्रम की पूजा ईश्वर की पूजा है।
श्रम के बिना मनुष्य स्वयं अधूरा है।
श्रम कौशल सबसे बड़ी कला है।
सबको नहीं प्राप्त,ईवर की दया है।

श्रमिक तिरस्कार अपमान ईश्वर का,
शरीर से पसीना बहाए दूत उसी का।
करो प्रेम, सेवा, सम्मान का व्यवहार उससे,
मिलेगा परमानन्द आत्मा को जिससे।

-कौस्तुभ आनन्द चन्दोला

गौरीकुंड में आपदा से फिर से सवाल उठा दिये हैं

रुद्रप्रयाग। पहाड़ में आपदा के पुराने घाव हरे हैं और नई चोट फिर-फिर लग रही है तो सवाल भी उतने ही उठने लगे हैं। पर्यटन के साथ आस्था की कैसी सवारी बढ़ती जा रही है कि मौत का खेल लगातार बना हुआ है। बहुत ज्यादा दबाव पहाड़ की सड़कों और शहरों में होने लगा है। ऊपर से कच्चे पहाड़ जिनमें भूगर्भीय हलचल मची हुई है।

विगत दिवस गौरीकुण्ड में भूस्खलन से दर्दनाक हादसा हुआ। दर्जनभर से अधिक लोग लापता होने पर उनकी खोज जारी है। तीन लोगों की उसी वक्त मौत हो गई थी। सोनप्रयाग से गौरीकुण्ड के बीच 6 किमी के इस क्षेत्र में हल्की बारिश के दौरान ही भूस्खलन होने लगता है। गौरीकुण्ड से करीब 500 मीटर पहले हुए भूस्खलन में पहाड़ी टूटकर गिरने लगी इसमें आसपास की दुकानें ध्वस्त हो गई। केदारनाथ यात्रा मार्ग पर पचास से अधिक अति सम्वेदनशील भूस्खलन क्षेत्र हैं। वह तो गनीमत रही इन दिनों यात्री कम हैं अन्यथा गौरीकुण्ड हादसे में अनगिनत लोगों को नुकसान होता। अभी भी भारी वर्षा से पत्थर और मलबा गिरने में है। प्रकृति की इस आपदा पर किसी का बस नहीं है, यह जरूर है कि सतर्कता और सावधानी के उपाय हों।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

राजीव नगर में अस्थायी कार्यालय हो

लालाकुआ। वन अधिकार अधिनियम को लेकर आयोजित बैठक में बिन्दुखत्ता को राजस्व गाँव बनाने के लिए गठित वन अधिकार समिति ने विकास को गति देने का निर्णय लिया है। समिति की ओर से सामुदायिक भवन चित्रकूट में आयोजित बैठक में कहा गया कि बिन्दुखत्ता के लिये नियुक्त ग्राम पंचायत विकास अधिकारी एवं सहायक समाज कल्याण अधिकारी के बैठने की व्यवस्था तहसील लालकुआ की बजाय बिन्दुखत्ता के राजीव नगर में होनी चाहिये।

कांडे कमस्यार में भूस्खलन का खतरा

बागेश्वर। काण्डा तहसील में अवैध खनन के बाद मलबा भण्डारण के कारण काण्डा में कई परिवारों को खतरा बना हुआ है। बीते दिनों दो परिवारों के घरों में मलबा घुसने से नुकसान हुआ है। खतरा देखते हुए प्रशासन ने घर खाली करवाकर अन्यत्र शिफ्ट कर दिया है। बताया जाता है कि मलबा भण्डारण के निकट ही कुछ परिवार रहते हैं। पूर्व विधायक ललित फर्स्वाण व पूर्व जिला पंयायत अध्यक्ष हरीश ऐंठाणी ने क्षेत्र का दौरा करते हुए शासन-प्रशासन पर लापरवाही के आरोप लगाए हैं।

पालिका आवासों के अवैध कब्जे हटेंगे

नैनीताल। नगर पालिका के आवासों में लम्बे समय से काबिज लोगों को नगर पालिका हटाने की कार्यवाही करने जा रही है। अधिशासी अधिकारी नू बताया है कि कब्जे में घिरे आवासों को खाली करवा कर पालिका के कर्मचारियों को दिया जायेगा। कब्जेदारों की सूची तैयार की जा चुकी है। बताया जा रहा है कि अपना आवास होने के बावजूद कुछ लोग सरकारी आवास पर कब्जा किये हुए हैं।

डीडीए के विरोध में धरना जारी

अल्मोड़ा। जिला विकास प्राधिकरण के विरोध में सर्वदलीय समिति के सदस्यों का गांधी पार्क में धरना जारी है। प्रदर्शनकारियों को सम्बोधित करते हुए संयोजक पालिकाध्यक्ष प्रकाश चन्द्र जोशी ने कहा कि प्रदेश की जनता करीब 5 सालों से जिला जिला विकास प्राधिकरण का विरोध करती आ रही है। जिसके बाद भाजपा के दो मुख्यमंत्री प्राधिकरण को समाप्त करने की घोषणा भी कर चुके थे लेकिन प्रदेश सरकार अपने ही वायदों पर अमल करने में नाकाम साबित हुई है।

चमनपुर भनखोला के पीड़ितों की मांग

लोहाघाट। बाराकोट ब्लाक के ग्राम पंचायत बैडाबैडवाल चमनपुर और भनखोला के ग्रामीणों ने विस्थापन की मांग को लेकर प्रदर्शन किया। वर्ष 2007 में दैवीय आपदा के बाद से यहाँ 25 ग्रामीणों के आवास को नुकसान पहुँचा था।

दारमा, चौंदास, व्यास घाटी में नए ट्रेकिंग रूट विकसित होंगे

उत्तराखण्ड में ऊँचाई वाले क्षेत्रों में लम्बे समय से बन्द और लुप्त ट्रेकिंग रूट विकसित होंगे। इसके लिये कुमाऊँ मण्डल विकास निगम ने सर्वे कार्य पूरा करा लिया है।

निगम के महाप्रबन्धक ए.बी. बाजपेयी ने बताया है कि सीमान्त की दारमा, चौंदास, व्यास घाटी में नए ट्रेकिंग रूट विकसित करने को पहले चरण का सर्वे पूरा हुआ है। आपदा व इन क्षेत्रों की अनदेखी के चलते कई सालों से इनके ट्रेकिंग रूट बन्द हो गए थे। जिन्हें खोलने व नए रूट विकसित करने की कार्य योजना बनाई गई है। एक टीम ने इन क्षेत्रों के ट्रेकर्स व पर्वतारोहियों के रहने, खाने-पीने की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। श्री बाजपेयी कहते हैं कि इस पहल से प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। सर्वे टीम ने कई स्थानों पर होमस्टे, ट्रेकिंग रूट, सांस्कृतिक स्थल चिन्हित किए हैं। केएमवीएन देश विदेश से आने वाले पर्वतारोहियों पर्यटकों को उत्तराखण्ड की संस्कृति की जानकारी देगा।

छावनियों के विलयीकरण की प्रक्रिया

देश की 61 छावनियों के स्थानीय निकायों में विलय की प्रक्रिया गतिमान है। हिमांचल प्रदेश की योल छावनी को स्थानीय निकाय का दर्जा मिलने के बाद फिलहाल प्रथम चरण में देश की 24 छावनियों के विलयीकरण की प्रक्रिया रक्षा मंत्रालय ने शुरु की है। रक्षा सूत्रों के अनुसार हिमांचल प्रदेश की योल छावनी का प्रशासन राज्य सरकार को सौंपे जाने के बाद अब देश की 24 छावनियों का प्रशासन राज्य सरकार को सौंपे जाने की प्रक्रिया तेज है। साउथ कमाण्ड की दस, सेन्ट्रल कमाण्ड की 11, वेस्टर्न कमाण्ड की एक और ईस्टर्न कमाण्ड की दो छावनियों के सिविल इलाकों कोा ही फिलहाल स्थानीय निकाय में शमिल किया जाना है। रक्षा मंत्रालय ने इसके लिये गाइडलाइन जारी की है। बताया जा रहा है कि मध्य कमान के अन्तर्गत पड़ने वाली छावनियों में उत्तराखण्ड की 9 छावनी बोर्ड में से 7 छावनी देहरादून, क्लेमनटाउन, नैनीताल, अल्मोड़ा, रुड़की, रानीखेत, लैंसडौन के नाम शामिल हैं। राज्य की दो अन्य छावनी मसूरी के छावनी क्षेत्र लंडौर व चकराता को 24 की सूची में शामिल नहीं किया गया है।

बागेश्वर उपचुनाव में प्रभारी बनाया

बागेश्वर। कैबिनेट मंत्री चन्दन राम दास के निधन के कारण रिक्त हुई विधान सभा की बागेश्वर सीट के उपचुनाव की तिथि अभी तक तय नहीं हुई है लेकिन पार्टियों की अपनी तैयारी हो रही है। इसी क्रम में भाजपा ने कैबिनेट मंत्री सौरभ बहुगुणा और भाजपा के प्रदेश महामंत्री राजेन्द्र बिष्ट को प्रभारी बनाया है। भाजपा के मीडिया प्रभारी मनवीर सिंह चौहान ने प्रदेश अध्यक्ष महेन्द्र भट्ट के हवाले से यह जानकारी दी। बताते चलें कि कैबिनेट मंत्री सौरभ बहुगुणा इस जिले के प्रभारी भी हैं। भाजपा ने उपचुनाव में प्रबन्धन की दृष्टि से सरकार व संगठन के बीच बेहतर समन्वय का सन्देश भी दे डाला है। इसी कारण सरकार की ओर से कबीना मंत्री बहुगुणा और संगठन की ओर से प्रान्तीय महामंत्री बिष्ट को चुनाव की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

सतगढ़ की जसुली धर्मशाला संवरेगी

पिथौरागढ़। पर्यटन विभाग की ओर से अब सतगढ़ की जसुली बूढ़ी शौक्याणी की धर्मशाला संवारने की तैयारी है। 33. 71 लाख रुपये की लागत से धर्मशाला का जीर्णोद्धार कार्य शुरु कर दिया गया है। इसे कुमाउंनी शैली में विकसित किया जा रहा है।

बताते चलें कि दानवीरांगना लला जसुली ने जगह-जगह धर्मशालाएं बनाई थी, उन्हें समय से साथ भुलाने, कब्जाने का कार्य होने लगा। इस दिशा में सक्रिय लोगों व अमा जसुली के परिजनों की गुहार के बाद शासन-प्रशासन का ध्यान इस ओर गया है। पिथौरागढ़-तवाघाट एनएच के सतगढ़ गाँव स्थित ऐतिहासिक धर्मशाला की देखरेख गाँव के ही जगदीश कापड़ी किया करते थे। इन्होंने साफ सफाई के अलावा फूल के पौंध यहाँ लगाकर इसे बचाने का प्रयास किया। अब इस धर्मशाला के संवरने के काम से वह बेहद खुश हैं। श्री कापड़ी जैसे बहुत कम लोग हैं जो जसुली अमा की यादों और ऐतिहासिक धरोहरों को बचाने के लिये सतर्क हैं। इस प्रकार की अन्य सतर्कता अन्य स्थानों पर भी जरूरी है इसके लिये अभियान जारी है।

गणाई गंगोली विकासखंड की मांग

गंगोलीहाट। गणाई गंगोली विकासखण्ड की मांग को लेकर क्षेत्रवासी एकबार फिर से लामबन्द होने लगे हैं। उनका कहना है कि 1970 से उनकी यह मांग को आज तक टाला गया है। दूरस्थ क्षेत्र की दिक्कतों को देखते हुए अविलम्ब गणाई गंगोली विकास खण्ड बनना चाहिये। विकासखण्ड नहीं होने से बनकोट, धारीधुमलाकोट, सेराघाट से 80 किमी की दूरी तय कर लोगों को अपने कार्य हेतु गंगोलीहाट जाना पड़ता है। उत्तर प्रदेश में जब एनडी तिवारी ने 1987 की शासन व्यवस्था में गणाईगंगोली को ब्लाक बनाने की घोषणा की थी जो आज भी अधूरी है। यहाँ तहसील भी खुल चुकी है लेकिन ब्लाक स्वप्न बना हुआ है। भाजपा शासन आते ही उम्मीद जगने लगी थी लेकिन इसमें भी कुछ नहीं हुआ है। अब लोकसभा चुनाव से पहले एक बार फिर से क्षेत्र के प्रबुद्धजन क्षेत्र की इस मांग को लेकर आवाज उठा रहे हैं।

भारतमाला के तहत सड़क चौड़ीकरण

मुनस्यारी। भारत माला योजना के तहत निर्माणाधीन चमोली-ग्वालदम-बागेश्वर, सामा-मुनस्यारी-जौलजीवी मार्ग पर सड़क चौड़ीकरण का कार्य मुनस्यारी बस स्टेशन से होकर मदकोट रोड चौराहा तक होगा। यह निर्णय विधायक की अध्यक्षता में आयोजित बीआरओ के कमाण्डर, एसडीएम और स्थानीय जन प्रतिनिधियों की बैठक में सर्वसम्मति से लिया गया। विकासखण्ड सभागार में क्षेत्रीय विधायक हरीश धामी की अध्यक्षता में तय हुआ कि रामगंगा पुल से जौलजीवी तक सड़क चौड़ीकरण का जो कार्य चल रहा है, मुनस्यारी में जो पूर्व से सड़क चौड़कीरण के स्थान पर सरमोली बैंड से कई मोड़ काट कर सरस बाजार तक मुनस्यारी बाईपास बनाया जाना था। इस बाईपास के बनने से मुनस्यारी बाजार अलग हो रहा है इसलिये इसे मुनस्यारी बाजार से ही बनाया जाए। इस बारे में 11 सूत्रीय ज्ञापन सौपते हुए कहा गया कि बाईपास बनने से विश्व मानचित्र से जुड़े मुनस्यारी को अलग-थलग करना होगा इसलिये इसमें संसोधन हो।

जापान के साके की तर्ज पर मंडुवा छंग

देहरादून। जापान के प्रसिद्ध पेय पदार्थ साके की तर्ज पर उत्तराखण्ड में भी मंडुवे की छंग को ब्राण्ड के रूप में स्थापित किया जायेगा। आबकारी, उद्यान और पर्यटन विभाग मिल कर इस पर काम करेंगे। पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज ने इस बाबत सम्बन्धित विभागों के अफसरों के साथ बैठक कर निर्देश दिये हैं। महाराज कहते है। पीएम मोदी का मोटे अनाज को बढ़ावा देने पर जोर है।

कपकोट में नर्सिंग कालेज की स्वीकृति

सीएम पुष्कर सिंह धामी ने विधानसभा क्षेत्र कपकोट के ससोला में नर्सिंग कालेज खोले जाने एवं कपकोट स्थित केदारेश्वर स्टेडियम की सुरक्षा हेतु बाढ़ सुरक्षा कार्य किये जाने की स्वीकृति प्रदान की है। इसके अलावा हरिद्वार के जलभराव वाले क्षेत्रों को आपदाग्रस्त घोषित करने एवं खटीमा क्षेत्र में पुस्तकालय तैयार करने, ड्रेनेज प्लान तैयार करने, आईटी आई व अन्य विषयों के साथ हस्तशिल्प प्रशिक्षण को स्वीकृति प्रदान की है।

परिक्रमा

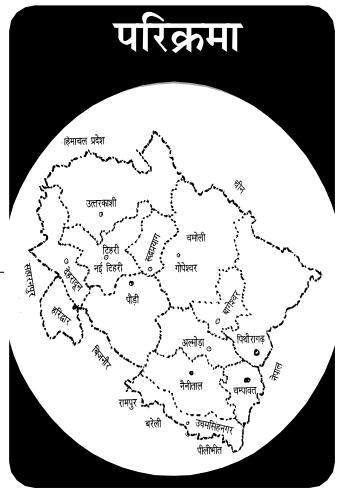

पूर्णागिरी मेले का संचालन जिपं करेगी

चम्पावत। पूर्णागिरी मेले का संचालन 13 साल बाद फिर से जिला पंचायत करेगी। बीच में प्रशासन इसे करने लगा था। जिपं के लिये शासनादेश पूर्व में ही हो चुका था। प्रभारी जिलाधिकारी हेमन्त वर्मा ने बताया है कि वर्ष 2024 से मेले का आयोजन जिला पंचायत करेगी, इसका शासनादेश प्राप्त हो चुका है। हर वर्ष होली (छरड़ी) के अगले दिन से पूर्णागिरी मेले का शुभारम्भ हो जाता है।

अल्मोड़ा में म्यूजियम निर्माण को स्वीकृति

देहरादून। सीएम ने अल्मोड़ा में धर्मशाला और क्राफ्ट म्यूजियम बनाने के लिये वित्तीय स्वीकृति प्रदान की है। इस धर्मशाला में क्राफ्ट म्यूजियम के निर्माण में 69.82 लाख की राशि अनुमानित है। इसके सापेक्ष सीएम ने प्रथम किस्त के रूप में 41.89 लाख रुपये की वित्तीय स्वीकृति प्रदान की है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

यूसीसी पर राजनीति नहीं स्वस्थ विमर्श की जरूरत

देवकृष्ण थपलियाल

वैसे तो उत्तराखण्ड में यूसीसी यानी समान नागरिक सहिंता पर चर्चा करना कोई नई बात नहीं है, पिछले साल ऐन विधान सभा चुनावों के वक्त अपनी पार्टी का प्रचार करनें निकले मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी नें अचानक चुनावी सभा में इसका ऐलान किया था कि सरकार बनने पर समान नागरिक सहिंता यूसीसी को कानूनी जामा पहनाया जायेगा। तब चुनाव का वक्त था, लोगों को लगा कि चुनावों में जीत हासिल करने के लिए यह पाशा फेंका गया है, लिहाजा ज्यादातर लोगों ने इसे गम्भीरता से लिया ही नहीं, कुछ लोग इसे चुनावी स्टंट तो कईयों ने इस वोंटों का ध्रुवीकरण करने कोशिश कह कर टाल दिया किन्तु भाजपा की अप्रत्याशित जीत के बाद फिर मुख्यमंत्री बने पुष्कर धामी नें इसको लेकर एक हाई लेबल विशेषाज्ञ कमेटी गठित कर अपने मजबूत इरादे जग जाहिर कर दिये। अब लग रहा है कि यूसीसी बहुत जल्द राज्य में लागू हो जायेगा ।

विगत एक साल से कमेटी ने हर फ्रन्ट पर काम किया है, लगातार बैठकों के जरिये, यूसीसी को समझनें-समझाने के लिए हर सम्भव प्रयास हुए हैं, तमाम सामाजिक, सांस्कृतिक शैक्षिक, धार्मिक, राजनीतिक, विचार, पंथ, क्षेत्र, सम्प्रदाय, बुद्धिजीवी, व्यवसायी, विद्यार्थी व नौकरी पेशा क्षेत्र के करीब 2.35 लाख लोगों से सम्पर्क कर उनके सूझाव-विचारों को ध्यान में रखते हुए, एक ड्राफ्ट भी तैयार कर लिया है, कमेटी की अहम सदस्य न्यायमूर्ति रंजना देसाई नें भी इसकी पुष्टी करते हुए कहा, 'हमनें सभी पक्षों से बात की है। यह रिर्पोट सामाजिक ताने-बाने को मजबूत करनें के साथ लैंगिक समानता को लागू करने वाली होगी।' इसका आशय है, कि सम्भवत: रिर्पोट बहुत जल्दी सामने आ जायेगी।

सीएम धामी ने कई बार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मिलकर उनकी यूसीसी की प्रगति और उनकी विशेष रुचि को दोहराया है, साथ ही मुख्यमंत्री धामी ने भी संकेत दिए हैं कि जल्द से जल्द इसे कानून का रूप दिया जायेगा। तब उत्तराखण्ड, गोवा के बाद देश का दूसरा राज्य बन जायेगा, जहाँ 'समान नागरिक सहिंता' कानून लागू है। गोवा में पूर्तगाली शासन ने 1867 में इसे लागू किया था, जिसे 1962 कुछ संशोधान करते हुए स्वतंत्र गोवा राज्य ने स्वीकार किया और तब से आज तक इस राज्य में समान नागरिक सहिंता कानून निर्विवाद लागू है। फिलहाल उत्तराखण्ड, गोवा की राह पर अग्रसर है, भाजपा के महत्वपूर्ण मामलों में समान नागरिक सहिंता कानून लागू करना भी है, राज्य सरकार की साहसिक पहल है, जिसका स्वागत है किन्तु सरकार देज भर में भी इसके पक्ष में माहौल बनाती दिख रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी 27 जून को भोपाल में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए समान नागरिक संहिता पर काम करनें की बात कह कर ये सुनिश्चित कर दिया है कि केन्द्रीय सरकार इसको लागू करने की जल्दी में है। विगत दिनों कानून मंत्रलय की संसदीय समिति की यूसीसी को लेकर एक अहम् बैठक हुई जिसमें सभी प्रमुख राजनीतिक दलों के सदस्यों को आंमत्रित किया गया, सांसद सुशील कुमार मोदी की अध्यक्षता में गठित इस बैठक में विधि आयोग के साथ-साथ सरकार के प्रतिनिधियों को भी बुलाया गया था। विधि आयोग द्वारा 13 जून को एक सार्वजनिक नोटिस के माध्यम से इस मुद्दे पर लोगों से राय मांगी थी, तब से यह मामला सुर्खियों में है। उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड ने कहा कि संविधान निर्माताओं की परिकल्पना के मुताबिक अब समय आ गया है कि देश भर में यूसीसी लागू हो, संविधान के हवाले से उन्होंनें कहा कि अनुच्छेद-44 में स्पष्ट कहा गया कि देश अपने नागरिकों के लिए 'समान नागरिक सहिंता' को सुरक्षित करने की कोशिश करेगा। केन्द्रीय मंत्री पीयूष गोयल भी स्पष्ट कर चुके हैं कि यूसीसी समय की जरूरत है।

सर्वोच्च न्यायालय भी शाहबानों केस से लेकर 2009 के गोवा दीवानी केस तक भारत सरकार को कई बार याद दिलाता रहा कि उसनें समान नागरिक संहिता बनाने सम्बन्धी संविधान के अनुच्छेद-44 के निर्देश का पालन नहीं किया गया है। शाहबानो मामले में पूर्व न्यायाधीश चन्द्रचूड नें लिखा था कि संसद को समान नागरिक संहिता की रूपरेखा तैयार करनी चाहिए क्योंकि इसी से राष्ट्रीय सामंजस्य और समानता का मार्ग प्रशस्त होगा। उच्चतम न्यायालय गोवा के 'समान नागरिक संहिता' की कई बार तारीफ कर चुका है, वास्तव में परिवार और समाज में महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक बराबरी और भागीदारी उन्नति के लिए बेहद महत्वपूर्ण है, जिसे नकारा नहीं जा सकता है।

समान नागरिक संहिता के अर्न्तगत परिवार में उत्तराधिकार, सम्पत्ति के बंटवारे, विवाह, तलाक, और तलाकशुदा का गुजारा भत्ते जैसे मामलों के कानूनों को अर्न्तराष्ट्रीय मानदण्डों के अनुरूप बनाकर उनमें एकरूपता लाती है। खासकर महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार और सशक्त न बनने बच्चों खासकार बेटियों में कुपोषण, अशिक्षा, शोषण आर्थिक पिछड़ेपन बड़ा कारण है। बाल विवाह, दहेज प्रथा, जैसी कुरूतियां भी सम्पत्ति के बंटवारे में भेदभाव से जुड़ी है। सम्पत्ति में बराबरी का हक न मिलने से उद्यमी महिलाओं का कर्ज लेने अपना उद्यम शुरू करने और आत्मनिर्भर बनने में कठनाई होती है। जो कि परिवार, समाज तथा अन्ततोगत्वा देश की प्रगति के लिए बाधक है।

देश में समान आचार सहिंता कानून लाने की बात आजादी से पहले भी उठने लगे थी, पं.जवाहर लाल नेहरू, डॉ.भीम राव अम्बेडकर व सरदार पटेल इस कानून के प्रबल समर्थक थे। 1957 के प्रथम स्वतंन्त्रता संग्राम के बाद अंग्रेजो ने कम्पनी से शासन अपने हाथों में लिया तो कानूनों में धीरे-धीरे सुधार व परिवर्तन शुरू हो गया था, हिन्दू धर्म के भीतर फैली कई कुरूतियों को समाप्त करने के लिए, अनेक समाज सुधारक आगे आये राजाराममोहन राय तथा ईश्वर चन्द विद्यासागर जैसे प्रमुख समाज सेवियों के कारण सती प्रथा जैसी अमानवीय व तथ्यहीन परम्पराओं को तिलांजलि दी जा सकी लेकिन दूसरे धर्मो के धर्म गुरूओं के अड़ियल रुख के कारण तीन तलाक व दूसरी कुप्रथाओं को संरक्षण मिलता रहा, जिससे उस समाज में महिलाओं की दुर्दशा होती रही, जो देश की तरक्की के में बाधा बनीं। दूसरा महत्वपूर्ण तथ्य धर्म या आस्था का विषय जो हर व्यक्ति का अपना है, देश तो संविधान से चलता है। लिहाजा कानून और संविधान की नजर में देश का हर नागरिक समान है, जिसके सम्मान और सुरक्षा की गारंटी संविधान में निहित है। लिहाजा देश के समस्त नागरिकों के लिए 'समान' कानून सभ्य राष्ट्र की पहचान है। भारत के अलग-अलग समुदायों, जाति-धर्मों के विवाह उत्तराधिकार सम्बन्धी निजी कानूनों को एक समान बनाने की पहल अंग्रेजों द्वारा की गई थी। हिन्दुओं के कानूनो में तो परिवर्तन होते रहे किन्तु मुस्लिम नेताओं के नकारात्मक रूख के कारण कानूनों में एकरूपता व समरसता नहीं आ पाई, नतीजन 1937 में अंग्रेजों नें शरीयत एक्ट पास किया जिसका सीधा मतलब था, मुसलमान सदियों पुराने कानूनों के अनुसार ही चलेंगे वे अपनी महिलाओं को कोई अधिकार नहीं देंगें। दूसरी तरफ अंग्रेज हिन्दुओं व मुसलमानों के बीच विद्वेष फैलाना चाहते थे। आजादी के इतने वर्षों बाद अब प्रगतिशील समाज व देश की पहचान के लिये जगना होगा।

गंगोलीहाट में फिर से हलचल

गंगोलीहाट। बेरीनाग को नगर पालिका बनाने के बाद गंगोलीहाट में फिर से यह हलचल है कि गंगोलीहाट और बेरीनाग में से किस निकाय को आरक्षण किया जायेगा। इस प्रकार की कई आशंकाओं के साथ नेतागण चुनाव तैयारी के लिये पूरी तरह अपनी तैयारी कर रहे हैं। ताकि हर स्थिति में वह अपनी गोटी फिट करें।

पुनर्स्थापन की मांग को लेकर प्रदर्शन

रुद्रपुर। जी-20 के नाम पर उजाड़े गये राम मनोहर लोहिया मार्केट के दुकानदारों ने जिलाधिकारी कार्यालय पर प्रदर्शन करते हुए पुनर्स्थापन की मांग की है। उनका कहना है कि रामनगर में जी-20 आयोजन को लेकर उन्हें उजाड़ा गया जिससे उनके सामने रोजी-रोटी का संकट है। विधायक की मौजूदगी में प्रशासन ने भूमि चिन्हित कर विस्थापन की बात कही थी लेकिन वादा खिलाफी की जा रही है।

बेरीनाग नगर पालिका बनने के बाद चुनाव की नई हलचल

बेरीनाग। नगर पंचायत बेरीनाग को नगर पालिका परिषद् बनाने की शासन की मंजूरी के बाद चुनाव की नई हलचल शुरू हो चुकी है। नगर पालिका के लिये कई वर्षों से मांग उठ रही थी और चाय बागान जमीन की अड़चन के चलते जैसे तैसे बेरीनाग के आसपास क्षेत्रों को जोड़ नगर पंचायत बना दी गई थी और इसके प्रथम चैयरमैन हेम पन्त बने। श्री पन्त ने भी नगर पालिका बनाये जाने के मुद्दे को जोरदार तरीके उठाया और धरना प्रदर्शन तक किया। इस समय जबकि शासन द्वारा नगर पालिका की घोषणा हो चुकी है, स्थानीय स्तर के चुनावों के लिये भी नई हलचल है। चूंकि पहले से ही वार्ड सदस्य और चैयरमैन बनने के लिये जोड़ घटाने लगाये जाने लगे थे। अब तो पालिका के बाद कई लोग इसमें सक्रिय हो चुके हैं।

भूगर्भीय हलचल से बुदी के ग्रामीण चिन्तित

धारचूला। सीमान्त क्षेत्र के बुदी ग्राम में भूगर्भीय हलचल से ग्रामीण चिन्तित हैं। कई बार हल्के भूकम्प के झटके महसूस कर चुके ग्रामीणों ने एसडीएम को ज्ञापन सौंपते हुए जांच की मांग की है। पूर्व क्षेत्र पंचायत सदस्य महेन्द्र सिंह बुदियाल ने ज्ञापन सौंपते समय बताया कि लगातार हल्के भूकम्पीय झटके महसूस होने से लोग भयभीत हैं। यहां पंकायर चट्टान से बड़े बोल्डर गिरने की घटना भी हो चुकी है। उन्होंने राजस्व विभाग की टीम द्वारा घटना की जांच कराने और भूगर्भ विशेषज्ञों की टीम से सर्वेक्षण की मांग की है। ज्ञापन देने वालों में जंगबहादुर रायपा, पदम सिंह, हेमन्त सिंह बुदियाल, जयराज रायपा, मुकेश सिंह थे। उनका कहना है कि प्रदेश में कई जगह बड़ी घटनाएं होने के बाद वह पहले से घबराए हुए हैं।

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल एवं जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

Hayat Paradise
Bus Station Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं-

धाम सिंह मर्तोलिया
श्रीकृष्ण विहार, बलुटिया गार्डन
मल्ली बमोरी, हल्द्वानी

हरीश सिंह टोलिया
बृन्दावन विहार
मल्लीबमोरी, हल्द्वानी

गंगा सिंह धर्मशक्तू
बृजवासी कलोनी
मुखानी, हल्द्वानी

रमेश सिंह बुर्फाल
मालती सदन, पार्वती कलोनी
बिष्टधड़ा, बिठौरिया, हल्द्वानी

बागनाथ हॉस्पिटल
बनखोला, बागेश्वर
डॉ.कैलाश सिंह जंगपांगी

नैनीताल सीट पर एनडी तिवारी के परिजनों का दावा

कांग्रेस प्रवक्ता दीपक बल्युटिया तैयारी में

हल्द्वानी। अपने समय के कद्दावर नेता रहे पं.नारायण दत्त तिवारी के परिजनों ने अब नैनीताल लोकसभा सीट से टिकट के लिये दावा किया है। उनका कहना है कि जिस नैनीताल-बहेड़ी सीट पर एनडी तिवारी की हमेशा धाक रही है और जिन्होंने तराई का विकास कर लोगों को रोजगार से जोड़ा, उनकी उसी धारा को आगे ले जाना है। विकास पुरुष के नाम से एनडी को आज भी सब लोग पूजते हैं, ऐसे में उनके परिवार से यदि कोई प्रतिनिधि होगा तो निश्चित ही एनडी के कई सपने और आगे दिखाई देंगे।

एनडी तिवारी के सानिध्य में राजनीति के गुर सीखने वाले कांग्रेस प्रवक्ता दीपक बल्युटिया ने बकायदा नैनीताल लोक सभा सीट से ताल ठोक दी है। उनका कहना है कि वह स्वस्थ्य और स्वच्छ परम्परा को देखते रहे हैं और उसे आगे बढ़ाने में विश्वास रखते हैं। कांग्रेस पार्टी यदि उन्हें इस सीट पर मौका देती है तो पार्टी के लिये ही लाभ है।

उल्लेखनीय है कि एनडी तिवारी अपने जीवन के चाहे किसी दौर में थे उनका साथ मामा परिवार में सर्वाधिक था। बल्युटिया परिवार लगातार वयोवृद्ध तिवारी जी का साथ निभाता रहा। जीवन के उत्तरार्द्ध में जब जब वह शारीरिक रूप से बेहद कमजोर हो चुके थे, हल्द्वानी में युवा नेता दीपक बल्युटिया ने जन्मदिन को विराट उत्सव की तरह मनाया जिसमें कांग्रेसी जुटे और यूपी से सपा नेता भी पहुँचे। हल्द्वानी विधानसभा सीट पर भी दीपक प्रबल दावेदार थे। अब लोकसभा सीट पर उनका दांव है।

सप्ताह के पर्व

श्रावण कृष्ण/शुक्ल पक्ष
15 अगस्त- स्वतंत्रता दिवस
16 अगस्त- अमावस्या
17 अगस्त- संक्रान्ति
19 अगस्त- हरियाली तीज

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती
फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते-
जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)